अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष-40, अंक-16, 1-15 अप्रैल, 2017

सर्व सेवा संघ द्वारा आयोजित चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह एवं अधिवेशन सम्पन्न

23 से 25 मार्च, 2017 : मोतीहारी (पूर्वी चम्पारण), बिहार

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 40, अंक : 16, 1-15 अप्रैल, 2017

प्रधान संपादक
बिमल कुमार
मो. : 9235772595

संपादक
अशोक मोती
मो. : 9430517733

संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ, साधना केन्द्र
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

मूल्य	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC No. UBIN-0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. सर्व सेवा संघ : आरोहण जारी है... 2
2. अपनी प्रवृत्तियों से अलग मेरा... 3
3. कृपलानी के घर गांधी... 4
4. गुणमूर्ति - कस्तूरबा... 6
5. कस्तूरबा : 150वां जनमदिन.. 7
6. बा-बापू के पास जयप्रभा... 8
7. नमक, धूल और फूल... 9
8. सर्व सेवा संघ का चम्पारण सत्याग्रह... 10
9. सर्व सेवा संघ : अधिवेशन सम्पन्न... 17
10. पत्र... 19
11. कविता... 20

संपादकीय

सर्व सेवा संघ : आरोहण जारी है

सर्व सेवा संघ के लिए यह अत्यन्त प्रसन्नता और गौरव की बात रही कि उसे चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह और अपना अधिवेशन (23-25 मार्च, 2017) चम्पारण की धरती पर आयोजित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

चम्पारण भारतवर्ष की वह पवित्र भूमि है जहां गांधी ने भूमिहीन और गरीबी में फंसे किसानों के जीवन में राहत देने तथा उन्हें अंग्रेजों के दमन से मुक्त करने के लिए मुक्ति की मसाल जलायी और उसे देश के कोने-कोने तक ले गये।

गांधी ने कहा कि 'मैं ऐसे भारत के लिए काम करता रहूंगा जहां सबसे गरीब यह महसूस करेंगे कि यह उनका देश है, जिसके निर्माण में उनकी असरदार आवाज रही है, ऐसा भारत जहां उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के लोग ही नहीं रहेंगे, ऐसा भारत जहां तमाम समुदाय के लोग पूर्ण सामंजस्य में रह सके। हम पूरी दुनिया के साथ शांति बनाकर रहेंगे, हम न तो शोषण करेंगे, न अपना शोषण होने देंगे। मैं भारत को स्वतंत्र और शक्तिशाली देखना चाहता हूं, ताकि वह दुनिया की बेहतरी के लिए इच्छापूर्वक शुद्ध त्याग के वास्ते खुद को प्रस्तुत कर सके।''

चम्पारण के किसानों से पहली मुलाकात में ही गांधी को यह पक्का विश्वास हो गया कि न्याय और नैतिकता उनके पक्ष में है। उन्होंने किसानों के मामले के औचित्य को समझ लिया, किसानों के सामने खड़े होने पर उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कि वे ईश्वर सत्य और अहिंसा के मूर्त रूप के सामने खड़े हैं, जब उन्होंने अपनी इस बलवती भावना पर गहराई से मनन-चिन्तन किया तो पाया कि चम्पारण की जनता से उन्हें प्रेम हो गया है और उसका कारण सत्य और अहिंसा के सिद्धांत में उनका अडिग विश्वास ही है। स्पष्टतः दक्षिण अफ्रीका से भारत आये गांधी ने चम्पारण में ही सत्याग्रह के अमोघ अस्त्र का अविष्कार और उसका सफल प्रयोग दोनों किया। इसी अस्त्र का प्रयोग कर गांधी ने देश को आजादी दिलाने में सफलता हासिल की। निःसंदेह दुनिया की परिवर्तनकारी शक्तियों ने गांधी के जिस अनूठे योगदान से प्रेरणा ली, वह था—''सत्याग्रह की खोज''।

यह बात अत्यन्त मार्के की थी कि गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम में इतनी अद्‌भुत सफलता प्राप्त करने के बावजूद अपने आदर्श के अनुरूप देश के पुनर्निर्माण के लिए सत्ता अपने हाथ में नहीं ली। किन्तु उन्होंने प्रस्ताव किया कि ''कांग्रेस'' को राजनीतिक क्षेत्र से हट जाना चाहिए और अपने को जिसे उन्होंने 'लोकसेवक संघ' कहा था, उसमें समेट लेना चाहिए। दुर्भाग्यवश गांधी की 30 जनवरी 1948 को हत्या हो गयी और राष्ट्रपिता की अंतिम इच्छा और वसीयत वैसी ही रह गयी जो उन्होंने अपनी हत्या के एक ही दिन पहले 29 जनवरी 1948 को लिखी थी—''कांग्रेस के नेतृत्व में भारत ने राजनीतिक आजादी प्राप्त की है। कांग्रेस का आज जो स्वरूप है, उसका ढांचा, प्रचारस्वरूप है। संसदीय तंत्र का वह एक यंत्र बन गया है, इसलिए आज की परिस्थिति में कांग्रेस कालबाह्य हो गयी है। राजनैतिक पक्षों की स्पर्द्धा से उसे अलग करना होगा। ये और अन्य कारणों के वजह से कांग्रेस विसर्जित करके उसका रूपातंरण लोकसेवक संघ में किया जाय।'' बापू ने सेवाग्राम में एक सम्मेलन बुलाने की भी योजना बना ली थी, जिसमें वे लोकसेवक संघ को एक सुदृढ़ रूप प्रदान करना चाहते थे। वे इसे देखने के लिए जीवित तो नहीं रहे परंतु हत्या के छः सप्ताह बाद सेवाग्राम में मार्च 1948 में आयोजित एक सम्मेलन में 'अखिल भारत सर्वोदय मंडल' यानी सर्व सेवा संघ का जन्म हुआ। संघ का उद्देश्य गांधीजी की उस योजना को आगे बढ़ाना था, जिससे सत्य और अहिंसा पर आधारित एक ऐसा जातिविहीन तथा गैर-शोषक समाज बने, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति तथा समूह को अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार विकसित होने का पूर्ण अवसर मिले। इसके

सदस्यों यानी लोकसेवकों को किसी भी राजनीतिक दल में शामिल होने की मनाही की गयी जो अब तक लागू है।

इसी सर्व सेवा संघ का 85वां अधिवेशन मुंशीसिंह महाविद्यालय, मोतीहारी, पूर्वी चम्पारण में संघ के अध्यक्ष भाई महादेव विद्रोही की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि **भाई महादेव विद्रोही** दूसरी बार सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष बनाये गये हैं। सर्व सेवा संघ के संचालन का दायित्व निभाने वाली यह पीढ़ी गांधी, विनोबा, जयप्रकाश के बाद की तीसरी पीढ़ी है जो 1974 जेपी आंदोलन के गर्भ से पैदा हुई पीढ़ी है, जिसे विनोबा, धीरेन मजूमदार, दादा धर्माधिकारी, आचार्य राममूर्ति, ठाकुरदास बंग, सिद्धराज ढड्ढा, नारायण भाई देसाई, अमरनाथ भाई, डॉ. रामजी सिंह जैसे विचारकों से भूदान, ग्रामस्वराज एवं 1974 आंदोलन में प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है। यह पीढ़ी एकरस और सक्षम पीढ़ी है जिसमें विचारों के प्रति निष्ठा, आचरण में संयम, सामाजिक परिवर्तन के अपने कार्यों के लिए उत्साह और प्रतिमान परिवर्तन कर आगे बढ़ने का पुरुषार्थ भी है।

पिछले तीन वर्षों में संपूर्ण क्रांति 1974 आंदोलन के गर्भ से निकले साथियों जिनके हाथों में **सर्व सेवा संघ** के संचालन का दायित्व है, उन्होंने एक नई ऊर्जा का संचार सर्वोदय आंदोलन में किया है तथा अपने अच्छे तेवर दिखाये हैं, अपनी गतिविधियां बढ़ायी हैं जो इस बात के प्रमाण हैं कि सर्व सेवा संघ का सतत आरोहरण जारी है।

अब जब राज्य सत्ता पूरी तरह वैश्विक पूंजी के साथ संबंध गांठ कर विश्व भर के प्राकृतिक स्रोतों यथा जल, जंगल, जमीन को वैश्विक पूंजी के नियंत्रण में लाने की हर कोशिश कर रही है और प्राकृतिक स्रोतों से जुड़े परम्परागत समुदाय शोषण व विस्थापन के शिकार हो रहे हैं तो गांधीजनों को लोक-शक्ति के प्रकटीकरण में प्राणपन से जुड़ना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गयी है। चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह और अधिवेशन तथा वक्त की यही पुकार है। **–अशोक मोती**

अपनी प्रवृत्तियों से अलग मेरा कोई अस्तित्व नहीं

❑ **गांधी**

सर *सर्वपल्ली राधाकृष्णन* ने मेरे 71वें जन्मदिन को खास महत्त्व दे डाला है। उन्होंने मुझे अपनी पुस्तक भेजी है, जिसमें अनेक परिचित और अपरिचित मित्रों द्वारा की गयी मेरी प्रशस्तियां हैं। इस पुस्तक के साथ उन्होंने जो पत्र भेजा है, उसमें भी कुछ और प्रशंसा की है। मैं नहीं जानता कि उस ग्रंथ में संकलित सब प्रशंसात्मक लेखों को पढ़ने का समय मैं कब निकाल पाऊंगा। मैं तो यही प्रार्थना कर सकता हूं कि ईश्वर मुझे शक्ति दे कि उन लेखकों के मन में मेरी जो तस्वीर है, मैं वैसा बन सकूं। सर सर्वपल्ली और उन सबको, जिनके आशीर्वाद और शुभकामनाएं मुझे प्राप्त हुई हैं, मैं धन्यवाद देता हूं। प्रत्येक को अलग से आभार प्रकट करते हुए पत्र लिख पाना मेरे लिए सम्भव नहीं है।

लेकिन अपने प्रशंसकों को मैं एक चेतावनी जरूर देना चाहूंगा। कुछ लोग सार्वजनिक स्थानों पर मेरी मूर्ति खड़ी करना चाहते हैं, कुछ तस्वीरें लटकाना चाहते हैं और कई हैं जो मेरे जन्मदिन को आम छुट्टी का दिन बना देना चाहते हैं। *चक्रवर्ती राजगोपालाचारी* मुझे अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए उन्होंने विवेकपूर्वक मेरे जन्मदिन को आम छुट्टी का दिन बनाने के सुझाव को रद्द कर दिया है।

आजकल मतभेद और कलह-क्लेश के दिन हैं। ऐसे समय में यदि मेरा नाम मतभेद और कल-क्लेश को बढ़ाने में किसी भी तरह कारण-रूप बनता है तो यह मेरे लिए शर्म की बात होगी। ऐसे अवसर न आने देना देश की और मेरी सच्ची सेवा होगी। मूर्तियों, चित्रों या अन्य ऐसी चीजों के लिए आज कोई अवकाश नहीं है।

मेरी सच्ची प्रशंसा इसी बात में है और मैं ऐसी प्रशंसा को ही मूल्यवान समझूंगा कि जिन प्रवृत्तियों के लिए मैंने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया है, उन प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाया जाये। ऐसा प्रत्येक स्त्री-पुरुष, जो साम्प्रदायिक मेल पैदा करने या अस्पृश्यता के कलंक को मिटाने या गांव का हित-साधन करने में से कोई एक भी काम करता है, मुझे सच्चा सुख और शांति पहुंचता है। विभिन्न खादी-भंडारों में जो खादी इकट्ठा हो गयी है, कार्यकर्ता इन दिनों उसे खपाने की कोशिश कर रहे हैं। इस खादी को यदि लोग खादी सप्ताह अथवा पखवाड़े में, जिसे गलती से गांधी-जयंती सप्ताह के नाम से विभूषित किया गया है, खरीद लें तो उनसे बढ़कर आशीर्वाद और खुशी की बात मेरे लिए और कोई नहीं हो सकती।

अपनी प्रवृत्तियों के बिना या उनसे अलग मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। ❑

चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी स्मरण

कृपलानी के घर गांधी

❑ रामबहादुर राय

कृपलानी के जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में भी कई ऐसे अवसर आये थे, जब उन्होंने निडर होने का परिचय दिया। एक वह घटना है जब वे स्कूल में पढ़ा रहे थे और अंग्रेज इंस्पेक्टर से डरे हुए छात्रों से उन्होंने सिन्धी में कहा था कि डरने की कोई जरूरत नहीं है, फलस्वरूप कृपलानी की उस स्कूल से छुट्टी हो गयी थी।

सन् 1917 के मार्च महीने में जब कृपलानी कॉलेज के अपने हॉस्टल निवास में रात साढ़े नौ बजे पहुंचे तो एक तार उनका इंतजार कर रहा था। वह तार पटना से आया था और उसे गांधीजी ने भेजा था, जिसमें यह सूचना थी कि वे अगले दिन आधी रात को ट्रेन से मुजफ्फरपुर पहुंच रहे हैं। तार एक दिन पहले भेजा गया था। उसका व्यवहार में अर्थ था कि ट्रेन कुछ ही घंटे बाद आने वाली है। इससे वे हक्के-बक्के रह गये। अनिवार्यता उनके दिल-दिमाग पर छा गयी। वे पूरे प्रबंध के बारे में सोचने लगे। उसकी एक-एक व्यवस्था के बारे में उनका दिमाग चल पड़ा। पहला सवाल था कि गांधीजी को कहां ठहरायें। अपने यहां ठहरा नहीं सकते थे। गांधीजी को असुविधा होती। वे हॉस्टल वार्डन के रूप में जहां रहते थे, वहां छोटे-छोटे दो कमरे थे। एक कमरा उनका निवास था तो दूसरा उनके काम-काज और किताबों से भरा हुआ था। इसलिए गांधीजी को वहां ठहराया नहीं जा सकता था। उन्होंने हल खोजा। प्रोफेसर एन. आर. मलकानी से बात की और उनके यहां गांधीजी को ठहराने का इंतजाम कराया। उसके बाद अपने छात्रों को बुलाया। उन्हें बताया कि गांधीजी आ रहे हैं। उनका स्वागत करना है। छात्रों को गांधीजी के बारे में कुछ पता ही नहीं था। यह कोई खास बात नहीं थी, क्योंकि उन दिनों मोहनदास करमचन्द गांधी ऐसा नाम नहीं था जो हर आदमी की जुबान पर हो। गांधीजी को वे लोग ही जानते थे जिनको दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह की कहानी थोड़ा-बहुत मालूम थी। ऐसी संख्या बहुत ज्यादा नहीं थी। गांव-देहात के छात्रों के लिए गांधी का नाम तब तक अनसुना था। यही समझकर कृपलानी ने छात्रों के सामने गांधीजी का विस्तार से वह परिचय दिया जिससे छात्र उनके व्यक्तित्व से परिचित हो सकें। तब छात्र भावभूमि पर उतरे। दरभंगा के एक ब्राह्मण छात्र ने सुझाया कि ''हमें अपने महान अतिथि का स्वागत आरती उतारकर करना चाहिए।'' यह सबको जँच गया। परम्परागत आरती में नारियल फल को एक जरूरी वस्तु माना जाता है। सवाल था कि नारियल उस समय कहां से लाया जाये। कॉलेज के परिसर में ही नारियल के पेड़ थे, पर समस्या थी कि नारियल के पेड़ पर कौन चढ़े और उसका फल तोड़े। यह काम *प्रोफेसर कृपलानी* को ही करना

पड़ा। उनके लिए यह एक खेल-तमाशा जैसा था। वे पेड़ पर चढ़े और नारियल के कई फल तोड़कर उतरे। पूरी तैयारी हो जाने पर पच्चीस छात्रों के साथ कृपलानी स्टेशन पहुंचे। आधी रात को ट्रेन आयी और छात्र व्याकुल होकर गांधीजी को खोजते रहे, लेकिन वे कहीं नजर नहीं आये। वे भीड़ में खो गये थे। कृपलानी ने ट्रेन के गार्ड से पूछा कि इसमें क्या गांधीजी आये हैं? गार्ड ने भी तब तक मोहनदास करमचन्द गांधी का नाम नहीं सुना था।

वह तो गांधीजी की ही प्रत्युत्पन्नमति थी कि वे उन छात्रों को पहचान सके जो व्याकुल होकर प्लेटफार्म पर दौड़ रहे थे। उन्हें देखा

और समझ गये कि वे किसी को खोज रहे हैं। अपने साथ भीड़ में खड़े राजकुमार शुक्ल से उन्होंने कहा कि इन छात्रों से पूछा कि वे किसे खोज रहे हैं? छात्रों ने कहा कि वे गांधीजी के स्वागत में आये हैं। इससे बात बनी और उन छात्रों ने कृपलानी जी को सूचित किया। उनका स्वागत हुआ। जब आरती हो रही थी तो गांधीजी संकोच में पड़े दिखे। उन्हें एक घोड़ागाड़ी में वहां छात्र ले गये, जहां ठहरना था। अपने *संस्मरण* में *कृपलानी* ने लिखा है कि *''मैंने अपने जीवन में ऐसा नेता नहीं देखा है जो स्वागत से संकोच में पड़ जाये।''* यह टिप्पणी अनुभव और प्रत्यक्ष प्रमाण पर आधारित है। इससे गांधी और कृपलानी दोनों के व्यक्तित्व का वह पहलू सामने आता है, जिसमें निःस्वार्थ भावना और सेवा भाव सर्वोपरि होता है। गांधीजी को जिस घोड़ागाड़ी में छात्र ले गये, वह एक जमींदार को लेने आयी थी। उसे कृपलानी ने अपने संबंधों के आधार पर गांधीजी के लिए उनसे मांग ली थी। उस घोड़ागाड़ी से छात्रों ने घोड़े निकाल दिये और वे खुद जुत गये। इसका पता गांधीजी को मुकाम पर पहुंचने के बाद लगा। वे उतरने पर सब समझ गये, लेकिन अब वक्त निकल चुका था। फिर भी अपनी नाराजगी उन्होंने छिपाई नहीं। प्रोफेसर कृपलानी ने उन्हें जहां ठहराया था उसके भूतल पर एक प्रोफेसर साहब रहते थे। वे घर छोड़कर कहीं चले गये, क्योंकि गांधीजी के ठहरने को वह अपने लिए विपत्तिसूचक समझते थे। उनकी समझ दुनियादारी के हिसाब से गलत नहीं कही जा सकती। एक तो कॉलेज सरकारी था और दूसरा कि जो मेहमान आने वाला था वह अंग्रेजों की नजर में कम खतरनाक नहीं माना जाता था। ऐसे में कौन प्रोफेसर भला यह बला मोल लेता! उन्होंने खुद को अनुपस्थित कर लेना मुनासिब समझा। वे गये और इसका असर उस पर हुआ जो मेजबान बना था। वे थे प्रोफेसर एन. आर. मलकानी। वे घबरा गये। जो बेफिक्र बने रहे, वे कृपलानी थे। लेकिन उन पर दोहरी जिम्मेदारी आ गयी। *प्रोफेसर एन. आर. मलकानी* को हिम्मत देना, पहली जिम्मेदारी थी और दूसरी कि मेहमान के स्वागत में कोई कमी न आये। यह काम निडर कृपलानी ही कर सकते थे। उन्होंने *प्रोफेसर एन. आर. मलकानी* से कहा कि *''आप बिल्कुल चिन्ता न करें। आप निश्चिन्त रहें। कॉलेज खुलते ही मैं प्रिंसीपल के पास जाऊंगा। उनसे कहूंगा कि गांधीजी मेरे मेहमान थे।''* फिर क्या था एन. आर. मलकानी को ढांढस मिला। यह कृपलानी के लिए और छात्रों के लिए भी चौंकाने वाली घटना थी। उन्हें अजीब लगा कि गांधीजी को मात्र ठहराने से कोई क्यों भयभीत होगा। पर माहौल ऐसा ही था। अंग्रेजी शासन का जो दबदबा था, वह बड़े-बड़े लोगों की हिम्मत तोड़ चुका था।

कृपलानी के जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में भी कई ऐसे अवसर आये थे, जब उन्होंने निडर होने का परिचय दिया। एक वह घटना है जब वे स्कूल में पढ़ा रहे थे और अंग्रेज इंस्पेक्टर से डरे हुए छात्रों से उन्होंने सिन्धी में कहा था कि डरने की कोई जरूरत नहीं है, फलस्वरूप कृपलानी की उस स्कूल से छुट्टी हो गयी थी। वैसी ही एक परीक्षा दूसरों की नजर में यह थी जो मुजफ्फरपुर में घटित हुई। कृपलानी के लिए यह एक अ-घटना थी, जो सहज और स्वाभाविक थी। लेकिन दूसरों के लिए यह घटना उस समय के हिसाब से साहस की एक बेमिसाल मिसाल थी। जब कॉलेज खुला तब वे अंग्रेज प्रिंसीपल के पास गये। उससे कहा कि छुट्टियों में गांधीजी यहां आये थे और मेरे मेहमान थे। वह भौंचक रह गया। प्रिंसीपल ने पूछा कि ''क्या वही गांधी जो दक्षिण अफ्रीका में अपनी शरारत के लिए कुख्यात है?'' प्रोफेसर कृपलानी बोले—''आपने सही समझा। वे वही मोहनदास करमचन्द गांधी हैं, जिन्होंने भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में लड़कर अधिकार दिलवाये, जिससे अंग्रेजों ने वंचित कर रखा था।'' यह सुनते ही प्रिंसीपल को सांप सूंघ गया। उसे कृपलानी की छाया भी डराने लगी। थोड़ी देर तक वह निःशब्द रहा फिर बोला—*''आप ऐसे खतरनाक व्यक्ति को ठहराकर जोखिम क्यों मोल लेते हैं?''* कृपलानी का जवाब था। वे बोले—*''वे आपके लिए खतरनाक हो सकते हैं। हमारे लिए वे प्रेरणा के पूर्ण पुरुष हैं।''* इस तरह की बातचीत अपने प्रिंसीपल से उस समय वही कर सकता था जिसका नाम प्रोफेसर जे. बी. कृपलानी है, दूसरा नहीं। ऐसी बात बराबरी के स्तर पर होती है। एक-दूसरे का नजरिया जानने और समझने के लिए होती है। अंग्रेज इसके आदी नहीं थे। वे बातचीत नहीं, आदेश की भाषा में बोलते थे, जिसके प्रभाव में ज्यादातर लोग आ ही जाते थे। कृपलानी खास थे। उन पर जिस कारण से उसका कोई असर नहीं पड़ता था, वह था उनका निडर स्वभाव और क्रांतिधर्मी विचार। एक बात और समझने की है। सीधा वही बोल सकता है जो क्रांति को अपने जीवन में घटित होते देखना चाहते हैं। ऐसे ही थे प्रोफेसर कृपलानी। ❑

'सर्वोदय जगत'
के सभी सुहृद पाठकों, शुभचिन्तकों, लेखकों से अनुरोध है कि अपने महत्त्वपूर्ण आलेख, रचनाएं, विचार एवं सुझाव पत्रिका के लिए भेजें। –सं.

11 अप्रैल बा जयंती : श्रद्धांजलि

गुणमूर्ति - कस्तूरबा

❑ राधा भट्ट

राष्ट्रमाता कस्तूरबा की 150वीं जयन्ती पर हम उन्हें अपनी कृतज्ञतापूर्ण स्मराणांजलि अर्पण करना चाहते हैं। मैं अपने चिन्तन में बा को जैसा समझ पायी हूं उन स्मृतियों को लिखने का प्रयास करती हूं। बा राष्ट्रमाता बनीं, मेरी नम्रतापूर्ण खोज है कि किस प्रकार समत्व से परिपूर्ण मातृत्व का व्याप एक राष्ट्र की विस्तृत सीमाओं को अपनी बाहों के आगोश में समेट सकता है? कैसे स्त्री के कोमलतम गुणों, संवेदना, वात्सल्य, क्षमा, करुणा और सहानुभूति के अंदर एक विश्वव्यापी साम्राज्य का मुकाबला करने की वीरता प्रस्फुरित हो सकती है? कैसे एक प्रेमल पारिवारिक स्नेह व सुरक्षा में पत्नी, स्त्री में कारागार के कठोर वातवरण को सहने की धीरता पैदा हो सकती है? हमने अपने जीवन में इस असम्भव को सम्भव किया था, उन्होंने अपने जीवन में वह पुरुषार्थ किया था, उस धीरता, वीरता और शुचितापूर्ण प्रेम की उदात्तता को उतारा था अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में। इन विरल गुणों को ही आज नमन करना है, इन्हें अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में उतारने की कोशिश करनी है।

राष्ट्रपिता की जीवनसंगिनी होने मात्र से नहीं वरन स्वअर्जित गरिमा ने उन्हें राष्ट्रमाता की उच्च कक्षा तक पहुंचाया था, देश को ब्रिटिश साम्राज्यवादी गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के संघर्षपूर्ण दिन हों या दक्षिण अफ्रीका के रंगभेदी-शोषण के खिलाफ की लड़ाई हो, बा कहीं उस संघर्ष या लड़ाई में पीछे नहीं रही, हम जरा सोचें, दक्षिण अफ्रीका में ब्रिटिशराज्य का वह कारागार, जहां अपनी कैद पूरी करके साथ बाहर निकलीं तो उनमें चलाने की शक्ति शेष नहीं रही थी। वे इतनी अशक्त हो गयीं थीं कि बापू को उन्हें गोद में उठाकर ले जाना पड़ा था, इतनी क्षीण शक्ल हो गयी थी कि एक मित्र ने बापू से पूछा था, ''गांधी क्या तुम्हारी मां बीमार है?'' कारागार के इतने विकट कष्टों को सहने की उनकी अदम्य शक्ति उनकी वैचारिक क्षमता का द्योतक तो है ही, क्षमा मांगकर अपने सत्याग्रह को न गिराने की प्रतिबद्धता भी है।

प्रतिबद्धता की यह गुणवत्ता बा ने हार्दिक और बौद्धिक समझपूर्वक अपने व्यक्तित्व का अंग बनायी थी, अपने व्यक्तिगत जीवन में भी यह गुणवत्ता उसी त्वरा के साथ विद्यमान थी। रोग से जर्जर उनके शरीर व उनके प्राणों को बचाने के लिए जब डॉक्टर ने सामिष-शोरबा पीने की बाध्यता बतायी तो बा ने मृत्यु को सहर्ष वरण करने की तैयारी रखी पर अपनी निरामिष की अटल प्रतिबद्धता को नहीं डिगाया।

प्रत्येक देश व समाज का एक सामूहिक चरित्र होता है, पैसे व सत्ता के लिए लोग अपनी निष्ठाओं को हर पल बदलते जा रहे हैं, देश के शीर्ष पर बैठे राजनेता जीवनभर जिस राजनीतिक दल में रहे, सत्ता पाने की दौड़ में उसके विपरीत सिद्धान्तों पर चलने वाले दल में शामिल होने में जरा भी शर्म नहीं महसूस कर रहे हैं। उसी प्रकार बड़े पैसे की दौड़ में अपनी नौकरियां बदलते जाने वाला युवा वर्ग भी है, वे किसी ऊंचे मकसद को सामने रखकर, किसी विचार-निष्ठा के प्रति सम्बद्ध होकर, किसी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जोड़कर निर्णय नहीं लेते, बस एकमात्र पैसा, चाहे वह खून में सना हो या मैल से लिपटा हो, प्रतिबद्धता कहां है?

बा का एक दूसरा गुण था, समझे बिना किसी बात को स्वीकार नहीं करना, समझकर स्वीकार करना और तहे दिल से संपूर्ण रूप से स्वीकार करना। जीवन के प्रारम्भिक दौर में जातिभेद से ऊपर उठने के विचार को उन्हें समझाने में बापू को बहुत समय लगा था, बा की ओर से दिये गये तर्कों और चर्चाओं में उन्हें बा की मौलिक बुद्धि शक्ति का भी दर्शन हुआ था। अन्त में वे समझीं और जातिभेद से पूरी समझ और संपूर्णता के साथ मुक्तमन हो गयी। भेद इतना मिटा कि हरिजन बालिका को उन्होंने आश्रम अंतेवासी के रूप में ही नहीं अपनी बेटी की तरह स्वीकारा व स्नेह दिया। इसी अद्‌भुत गुण को परखकर बापू ने कहा था, ''अगले जन्म में भी मुझे अपनी जीवनसंगिनी चुननी हो तो मैं बा को ही चुनूंगा।''

बा की गिनती तथाकथित पढ़ी-लिखी महिलाओं में नहीं होती, किन्तु उनके व्यक्तित्व को एक सुसंस्कारी परिवार और समाज ने ऐसा गढ़ा था कि उनकी सोचने व चिन्तन करने की शक्ति तथा सत् असत् का विवेक बहुत ऊंचे स्तर तक विकसित हुआ था। बा ने इन गुणों को केवल परम्परा के प्रवाह में नहीं वरन् समझपूर्वक ग्रहण किया था, ऐसा लगता है क्योंकि उनमें तर्क और विश्लेषण की शक्ति भी श्रद्धा व भक्तिभाव के बराबर ही प्रबल थी। उनके साथ आश्रम में रहने वाली बहनों ने कहा है कि किसी व्यक्ति की सत्यता

व ईमानदारी को वे स्वयं के विश्लेषण व अपनी आंतरिक विवेक शक्ति से परख लेती थीं।

बा के इन विरल गुणों में उनके व्यक्तित्व का सर्वोपरि गुण था उनकी नम्रता, विश्वमान्य एक विभूति पुरुष महात्मा गांधी की सहधर्मिणी होना ही अपने में एक बड़ा गौरव था, उसके ऊपर उठा देती थी तो भी आजन्म बा के स्वभाव में, वाणी-व्यवहार में और रहन-सहन, वेषभूषा में यह नम्रता और निरहंकारिता कायम रही, उनका कोमल वात्सल्य आजीवन उनके आसपास के वातावरण में एक स्निग्धता फैलाता रहा।

गांधीजी के आसपास देश की आजादी के उस संघर्षकाल में कई लोग कई कई पार्श्व भूमिकाओं से आये थे, उनमें हिन्दू मुस्लिम, सिख, पारसी सभी धर्मों सम्प्रदायों के थे। उनमें विभिन्न विचारों व तेवरों के लोग थे। प्रतिदिन स्थितियां बदलती थीं और उसी प्रकार बहसें व प्रतिक्रियाएं बदलतीं थी। अपनी-अपनी सोच, अपना-अपना निर्णय और कर गुजरने के अपने-अपने इरादे। नेताओं व कार्यकर्ताओं के इस समूह में अपनी नम्रता व मातृ वात्सल्य से बा ने एक समभावना का मृदुतापूर्ण वातावरण बनाया था। मौलाना आजाद हों या वल्लभभाई या फिर जवाहरलाल, बा उनके बीच एक मानवीय माधुर्य का रिश्ता रचती थीं, एक आत्मीयता का रस घोलती थीं। जीवन के हर क्षेत्र में आज भी स्त्री उस मानवीय मूल्यों न्याय, एकता, समानता का रस घोल सकती है जो महान पराक्रमों से भी ऊपर का पराक्रम है, बा ने यह पराक्रम उस कठिन समय के दौर में अपनी विशिष्टता के साथ निभाया था।

बा का व्यक्तित्व अनन्त काल तक इस महान पराक्रम या प्रकाश मानव समाज को देता रहेगा। मानव समाज इस ज्योति के साथ अपना पथ प्रशस्त करेगा।

विनम्र श्रद्धांजलि! ❑

कस्तूरबा : 150वां जन्मदिन

2018-19 यह महात्मा गांधी और कस्तूरबा—दोनों का 150वां जन्मदिन का वर्ष है। इस अवसर पर उनके जीवन और कार्य से प्रभावित कई व्यक्ति, संस्थाएं तथा संगठनों ने इकट्ठा आकर गांधी-150 अभियान शुरू करना तय किया। गांधीजी द्वारा स्थापित और आज भी सक्रिय ऐसी आठ संस्थाओं ने इस संदर्भ में अगुवाई की। 21-22 फरवरी को *सेवाग्राम आश्रम* के पावन परिसर में सम्पन्न सादगीभरे प्रेरक सभारंभ में इस अभियान के राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम के मंगलाचरण की घोषणा की गयी।

गिरिराज किशोर जी ने बा के जीवन के कई प्रेरक प्रसंग बयान किये, जिससे उनका स्वतंत्र, प्रेममय व्यक्तित्व उभर कर आया। साथ ही साथ उन्होंने गांधी अम्बेडकर, गांधी सुभाष और गांधी भगत सिंह के संबंध में व्याप्त गलतफहमियों पर निशाना साधा।

कस्तूरबा ट्रस्ट की प्रमुख *सुश्री चतुरा बहन* ने कहा कि कृष्ण के बाद गांधी पहले पुरुष हुए जिन्होंने नारी को समान स्थान देकर उनकी मुक्ति की तरफ एक कदम बढ़ाया। कस्तूरबा गांधी की ऐसी सहधर्मचारिणी थी, जिन्होंन उनका हर कदम पर साथ दिया, लेकिन उनके विराट व्यक्तित्व की छांव में रहकर भी जिन्होंने अपनी तेजस्विता, नैतिकता और सौन्दर्य दृष्टि नहीं खोयी। सत्याग्रह का मर्म त्याग में है और बा पल-पल जलती मोमबत्ती या संदल की तरह त्याग की प्रतीक थीं। वे भारतीय नारी के लिए सच्चे मातृत्व की प्रतीक हैं, जिस राह पर चलकर ही हम सच्चे अर्थ में मुक्त हो सकते हैं।

मुम्बई से आयीं *नफिसा बहन* ने उनके दिल को चुभनेवाली कुछ बातों का जिक्र किया, जैसे कि नारी और पुरुष में हर पल भेदभाव बरता जाना, ईशान्य भारत से आयी बहनों को भारतीयों ने 'चिनी' कराकर करना, आचरण से गांधीवादी होने के बावजूद सिर्फ खादी न पहनने के कारण किसी को सर्वोदय परिवार का हिस्सा न मानना। उन्होंने विश्वास प्रकट की कि पुरुषसत्ता का शासन टूटकर समता का युग आयेगा।

कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि **न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी** ने अपने बोधप्रद व्याख्यान में कई विषयों को छुआ। उनमें से कुछ विशेष बिन्दु इस प्रकार हैं :

* गांधी संस्थाओं में आज सख्यभाव और जीवंतता नहीं रही। हमें उनका पुनर्निर्माण करना होगा। हमें इस्टेट एजेण्ट्स की नहीं, गांधी के कार्यकर्ताओं की जरूरत है। आपसी मतभेदों पर रोक लगे। हम आपस में इकट्ठा आयें तो ही हम दुनिया को अपने साथ लाने की बात कर सकते हैं।
* बा के बिना गांधी 'गांधी' नहीं बन सकते थे। वे अपने आपमें पूर्ण थी, उनका अपना व्यक्तित्व और विचार थे। वे बापू की आज्ञाकारी नहीं थी, न ही वह अपने आपको गांधीवादी कहलाती थी।
* बा का पुण्यस्मरण करने का हक हमें तभी मिल सकता है, जब हम स्त्री-दास्य के कुछ प्रतीकों से तो मुक्त हो जायें, जैसे कि दहेज, कन्यादान, महंगी शादियां आदि।
* गांधीजी और कस्तूरबाजी एक दूसरे को 'बा' और 'बापू' कहकर बुलाते थे। यह सामाजिक ब्रह्मचर्य का आविष्करण है, जहां पर पत्नी का अपने बच्चे की मां होना ज्यादा मायने रखता है और उसके उपरांत दोनों एक-दूसरे के बच्चे बन जाते हैं।

इस अवसर पर सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान के अध्यक्ष जयवंत मठकर, ख्यातनाम पत्रकार रमेश ओझा आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। ❑

11 अप्रैल : प्रभावती जयंती

बा-बापू के पास जयप्रभा

❑ निर्मला देशपांडे

1965 में महिला चरखा समिति की रजत-जयंती मनायी गयी। पचीस वर्षों पहले का बोया हुआ बीज अंकुरित होकर अब स्वाश्रयी ग्रामसेवा-प्रशिक्षण, अम्बर विद्यालय, अम्बर परिश्रमालय, कन्डेन्स्ड कोर्स, बालिका विद्यालय, बुनाई-प्रशिक्षण, गृहोद्योग-विभाग, नारी सहयोग-विभाग, बलवाड़ी, कमला नेहरू शिशु विहार, प्रकाशन-विभाग, पटना सिटी शाखा, ग्राम-केन्द्र जैसी विविध प्रवृत्तियों के द्वारा फल-फूल रहा था। पटना में समिति का अपना भवन बना था, जो जेपी और दीदी का भी निवास-स्थान था, जहां अनेकों लड़कियों ने शिक्षा पायी, प्रौढ़ों ने प्रशिक्षण पाया, कार्यकर्त्रियों ने समाज-सेवा की शिक्षा पायी। आजादी की लड़ाई की सैनिकाओं के नाते काम, भूदान-आंदोलन में पदयात्राएं, शहर में घर-घर जाकर सर्वोदय-पात्र रखवाना, साहित्य-प्रचार करना, कौमी दंगों में मुस्लिम शरणार्थियों की सेवा, अकाल के समय राहत-कार्य, महिला-शिविर आदि विविध काम समिति की महिलाएं करती रहीं। बिहार के स्त्री-शक्ति जागरण के प्रधान केन्द्र के नाते बिहार के रचनात्मक क्षेत्र में समिति का अपना विशेष स्थान बन गया। प्रारंभ के वर्षों में राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद और बाद में जेपी जैसे राष्ट्रीय नेताओं का मार्गदर्शन समिति को सहजता से प्राप्त हो रहा था। दीदी बहनों से कहतीं : ''समिति मेरी संतान है।'' जेपी के साथ छाया की तरह घूमने वाली, उनकी सेवा में निरंतर रत, आधुनिक युग की यह आदर्श पतिव्रता, इतनी बड़ी संस्था का निर्माण-विकास कैसे कर सकी, कहां से समय निकाल सकी, यह एक आश्चर्य ही है। समिति के काम में सब कुछ करते हुए भी वे कुछ नहीं करती थीं, कुछ भी न करते हुए सब कुछ करती थीं। सूर्य के अस्तित्वमात्र से जगत के समस्त व्यवहार चलते हैं। देशव्यापी यात्रा में बीच-बीच में चार-छह दिनों के लिए वे पटना आतीं, तब उनका आश्रम में एक बार घूम लेना ही सबको प्रेरणा और बल देता। वे किसी की पीठ थपथपातीं, किसी को डांटतीं तो किसी को फटकारतीं, लेकिन खबर सबकी लेतीं। समिति के लिए चन्दा करने में उनके ही पराक्रम का प्रधान हिस्सा रहता। राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू के जन्मदिन के अवसर पर समिति की ओर से 'बिहार की महिलाएं' नाम का एक बोधपूर्ण ग्रंथ तथा रजत-जयंती के अवसर पर 'महिला चरखा समिति पत्रिका' का विशेषांक प्रकाशित हुआ, जिसमें लेखन, संपादन, संचयन का दायित्व महिलाओं का ही था। महिलाओं के परिश्रम और पराक्रम की समाज में उपेक्षा होते देख वे कई बार झुंझलाकर कहतीं : ''ये बिहार के पुरुष कभी महिलाओं को आगे नहीं आने देंगे।'' किसी सभा-सम्मेलन में महिलाएं कोने में या पीछे बैठी हों तो दीदी उन्हें आगे लातीं और कहतीं : ''पीछे मत रहो।'' समिति के कैन्टीन में बड़ी-पापड़ बनाकर या परिश्रमालय में चरखा चलाकर स्वावलंबी बनी हुई गरीब महिला या बिहार के महिला संगठनों का नेतृत्व करने वाली उच्च शिक्षित महिला हो, सभी दीदी की प्रेरणा और संबल को निरंतर याद करती रहती हैं। बिहार की उदीयमान लेखिका बिन्दु सिन्हा कहती हैं कि मामी (दीदी) की प्रेरणा और मदद के बिना मैं लेखन-क्षेत्र में कोई जगह नहीं बना पाती। वे चाहतीं कि महिलाएं गुलामी की जंजीरें तोड़ फेंके, विद्रोह करें, लेकिन ऐसा विद्रोह रचनात्मक होगा, अहिंसक होगा, विरोधियों को समर्थकों में और आलोचकों को प्रशंसकों में परिवर्तित करने वाला होगा। उन्होंने अपने जीवन में ऐसा ही विद्रोह किया था और सफलता पायी थी। सेवा और समर्पण द्वारा जीतने, मिटकर अमिट बनने, मौन की अद्‌भुत कला हासिल की थी, जो उन्होंने जीवन-कला के एक अनोखे कलाककार से सीखी थी।

बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए पटना के सदाकत आश्रम के उपवन में 'कमला नेहरू शिशु विहार' की स्थापना कर उन्हें कमलाजी की स्मृति में नाचते-फुदकते शिशुओं का एक स्मरणीय उद्यान खड़ा किया। समिति की रजत-जयन्ती-समारोह बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया, तब मंच से बोलने वाली महिलाओं में दीदी कहीं नजर नहीं आ रही थीं। भाषण न देने का उन्होंने संकल्प ले रखा था। इसलिए देश में कई स्थानों में आयोजित महिला सभाओं के मंच से जेपी भाषण देते : ''प्रभावती मेरे सब काम करती है, लेकिन उसका यह एक काम मुझे करना पड़ता है।'' दीदी मंच पर बैठी चरखा चलाती रहतीं। अपने कुल सार्वजनिक जीवन में दीदी ने न एक भी भाषण दिया, न एक भी लेख लिखा। फिर भी उनका असर, बहुत गहरा असर होता रहा। वे अपने जीवन से शायद कबीर का वचन दुहराना चाहती थीं :

'कोरा कागज, काली स्याही
लिखत-पढ़त वाको पढ़वा दे
तू तो राम-सुमर, जग लड़वा दे।' ❑

6 अप्रैल : दांडी नमक सत्याग्रह

नमक, धूल और फूल

❑ **सुमंगल प्रकाश**

डांडी यात्रा में शामिल होने वालों के नाम लिख लिए गये थे। हरेक सिर्फ एक झोला रख सकेगा, उसमें भी कम से कम सामान। सभी को तब तक घर या आश्रम छोड़ देना था, जब तक पूर्ण स्वराज्य नहीं मिल जाता। सारी ममता, माया का बंधन काट कर, प्राणों को हथेली पर लेकर बिदा होना था। जो रास्ते में बीमार पड़ेगा, उसे वहीं छोड़कर आगे बढ़ना होगा—ऐसा भी गांधीजी कई बार कह चुके थे। सुमंगल प्रकाश बीमार पड़ ही गये। मामूली बीमारी नहीं, उन्हें चेचक हो गयी थी। तब उन्होंने जिस गांधी को देखा, वो गांधी सब नहीं देख पाये थे—कभी लगा यह तो पत्थर से भी कठोर है तो कभी लगा अरे ये तो फूल से भी कोमल है!

12 मार्च 1930, सबेरे साढ़े छह बजे साबरमती आश्रम से गांधीजी के सेनापतित्व में नमक-सत्याग्रह करने वाला पहला दल रवाना हुआ। यह यात्रा इतिहास में *डांडी-यात्रा* के नाम से मशहूर है। गांधीजी को मिलाकर इस दल में प्रस्थान के समय उनासी आदमी थे; पीछे जाकर इस संख्या में कुछ वृद्धि हुई।

गांधीजी को छोड़कर सभी 'सैनिकों' के सिर पर सफेद गांधी टोपी थी; यही डांडी यात्रियों की एकमात्र समान-पोशाक थी। बाकी बातों में यात्रियों की विषमता का कोई ठिकाना नहीं था। हिन्दुस्तान के प्रायः सभी प्रांतों के निवासी उस दल में थे। वेशभूषा में भी अधिक से अधिक विभिन्नता थी। कुछ सफाचट मूंछ-दाढ़ी वाले थे तो कुछ लंबी-चौड़ी, बढ़ी हुई मूंद-दाढ़ी वाले भी। और कुछ ऐसे भी थे, जिनके अभी तक मूंछ-दाढ़ी के चिह्न भी नहीं दिखायी दिये थे, अर्थात किशोर।

पोशाक में यदि कुछ चप्पल, धोती, कुरता और टोपी वाले—अर्थात पूरे भलेमानस—थे तो कुछ चप्पल के ऊपर लुंगी और उसके ऊपर ढीला ढाला कुरता और टोपी पहने थे; कुछ पूरी धोती, पर नंगे बदन थे; कुछ कुरते की जगह चादर ओढ़े हुए थे; और कुछ बिलकुल नंगे पैर, खुले बदन—केवल एक लुंगी और ऊपर से शुभ्र गांधी टोपी, जो सिर पर इस तरह सम्यक रूप से रख ली गयी थी कि माथा बिलकुल ही छिप गया था। तुलसीदास ने रामचरित मानस में शिवजी की बारात का जो वर्णन किया है, बहुत कुछ वही उस दल पर चरितार्थ होता था!

इस सेना के मार्च, कूच का तरीका भी अपने अनोखे ही ढंग का था। दो-दो सैनिकों के पीछे दो-दो सैनिक खड़े हो जाते थे और इस प्रकार एक दोहरी कतार जरूर बन जाती थी; पर उनके कूच में कोई फौजी व्यवस्था नहीं थी। चलने का मार्ग जैसा हुआ उसी के अनुसार फौज अपनी रूपरेखा बदल डालती थी। चौड़ी सड़क पर चार-चार भी एक साथ हो जाते थे, और कभी-कभी तो कोई भी तरतीब नहीं रहती थी। कभी-कभी एक-एक की कतार भी हो जाती थी। यह भी अक्सर होता था कि कुछ सैनिक बहुत आगे बढ़ गये, कुछ बीच में रह गये और कुछ पीछे पड़ गये। सेनापति गांधी बिना पीछे का ख्याल रखे बराबर तेजी से कदम बढ़ाये चलते जाते थे, और अक्सर दूसरों के लिए उनका साथ रखना मुश्किल हो पड़ता था। अक्सर तो यही देखा जाता था कि वे अकेले बढ़े जा रहे हैं—दोनों कंधों पर दो छोटे-छोटे थैले लटकाये, एक हलका चादर ओढ़े, लुंगी कसे, चप्पल पहने और उनके पीछे-पीछे उनके निकट रहने की कोशिश में हांफते-से प्यारेलाल छगनलाल जोशी आदि दो-चार बड़े सैनिक!

साथ में झंडा-वंडा कुछ भी नहीं था। बैज भी कोई नहीं था। यात्रा के कुछ दिनों बाद एक बार जवाहरलाल नेहरू ने भारत के नक्शे का एक-एक बैज हर 'सैनिक' की पोशाक में लगे रहने का गांधीजी से आग्रह किया था। गांधीजी ने शायद इसे उनका 'बचपन' समझ कर हंसते हुए स्वीकार कर लिया था और तब से हर-एक 'सैनिक' के पास एक बैज भी हो गया था जो किसी की टोपी के दाहिनी ओर, किसी की टोपी के बाईं ओर, किसी के कुरते पर दाहिनी छाती पर, किसी के कुरते पर बाईं छाती पर, और किसी की चादर पर ही सुशोभित हो गया था। गांधीजी की चादर पर, सुनते थे, जवाहरलाल जी ने स्वयं एक बैज लगा दिया था, पर वह कभी बाद को दिखाई नहीं दिया। सुना यह जाता था कि गांधीजी उनकी इच्छा का सम्मान करने के लिए बैज लगाये जरूर रहते थे, पर वह चादर के ऊपर नहीं, चादर के भीतर रहता था!

12 मार्च 1930 को सबेरे साढ़े छह बजे जब गांधीजी और उनके अनुयायियों ने डांडी के लिए प्रस्थान किया तब साबरमती आश्रम वाली सड़क पर बीसों हजार नर-नारियों की भीड़ थी। इनमें से अधिकांश नर-नारी तो सारी रात वहीं अड्डा जमाए हुए थे। जिस समय प्रस्थान हुआ, उस समय की भीड़ देखने लायक थी। स्वयंसेवकों की दो-दो कतारें बाहों की जंजीर बनाये डांटी यात्रियों के दोनों ओर निरंतर चल रही थीं। यदि जरा देर के लिए भी इन मानव-जंजीरों का कोई हिस्सा टूट गया होता तो बेचारे डांडी यात्रियों में से कितने सदा के लिए धराशायी हो जाते, इसका अंदाजा नहीं किया जा सकता। इतना तो मैंने देखा ही कि हमारे साथियों में से किसी-किसी की कोई चीज उसके झोले में से असावधानी के कारण जब गिर पड़ी तो उसे उठाने की कल्पना तक वह नहीं कर सका, क्योंकि क्षण भर के लिए भी उस गतिशील

...शेष पृष्ठ 18 पर

सर्व सेवा संघ का चम्पारण सत

श्री नीतीश कुमार एवं श्री तुष

नीलहों के अत्याचार से मुक्ति के लिए महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुए चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 23 एवं 24 मार्च 2017 को पूर्वी चम्पारण के जिला मुख्यालय मोतीहारी में सर्व सेवा संघ द्वारा 'चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह' आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार एवं महात्मा गांधी के प्रपौत्र श्री तुषार गांधी एवं अध्यक्ष महादेव विद्रोही ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में बिहार के शिक्षा मंत्री श्री अशोक चौधरी, डॉ. एस. एन. सुब्बराव, स्वामी अग्निवेश, मेधा पाटकर, पी. वी. राजगोपाल, जलपुरुष राजेन्द्र सिंह आदि उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र में इनके अतिरिक्त मंचासीन थे—पूर्वी चम्पारण जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष ब्रजकिशोर सिंह, चंदन पाल, आदित्य पटनायक, नीता महादेव, रमण कुमार, महावीर त्यागी, तपेश्वर भाई, अशोक मोती, अरविन्द अंजुम, डॉ. एच.

याग्रह शताब्दी समारोह सम्पन्न

र गांधी ने किया उद्घाटन

एन. ठाकुर आदि। सभा का संचालन रमेश पंकज ने किया। समारोह में 23 राज्यों के सर्वोदय कार्यकर्ता तथा विभिन्न सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए जूझ रहे कार्यकर्ता, किसान अग्रणी, युवा तथा स्थानीय नागरिक हजारों की संख्या में उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ गांधीवादी, पूर्व सांसद, पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह।

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री महादेव विद्रोही ने समारोह की प्रस्तावना रखते हुए कहा कि – चम्पारण सत्याग्रह के 100 साल पूरा होने के बावजूद शोषण एवं दमन का दौर न तो समाप्त हुआ है और न ही भूमि समस्या का समाधान हो सका है। यह हमारे सामने चुनौती बनकर खड़ा है। इसका समाधान करना ही शताब्दी समारोह का सच्चा स्मरण होगा।

उन्होंने कहा कि कई लोग यह सोचते हैं कि गांधी जी को गोली मार देने से उनकी बातें खत्म हो जायेंगी। उन्हें यह समझना चाहिए कि हमारे लिए गांधी एक व्यक्ति नहीं बल्कि

चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह में मंच पर बैठे बिहार के मा. मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार एवं शिक्षमंत्री श्री अशोक चौधरी

विचार हैं। विचारों को कोई भी बंदूक मार नहीं सकता। गांधी कभी मरता नहीं, उसे मारा नहीं जा सकता। पूरी दुनिया जानती है कि जिस महात्मा गांधी के कारण अंग्रेजी सल्तनत सिर्फ भारत से ही नहीं बल्कि दुनिया के अनेक देशों से भी खत्म हो गया, उसी ब्रिटिश सरकार के प्रधानमंत्री श्री डेविड कैमरोन ने पिछले दिनों ब्रिटिश संसद के सामने महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया। यह दर्शाता है कि महात्मा गांधी सिर्फ भारत के नहीं बल्कि मानवता के प्रतिनिधि थे। गांधीजी कहते थे, उनकी लड़ाई अंग्रेजों से नहीं बल्कि अंग्रेजियत से मुक्ति है।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आपने आगे कहा कि महात्मा गांधी के सत्य व अहिंसा की नीतियों से ही देश को आजादी मिल सकी। उन्होंने चम्पारण से ही स्वतंत्रता संग्राम की मुहिम छेड़ी थी। इसके सौ साल पूरे होने पर सत्याग्रह शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है।

एक वर्ष तक पूरे बिहार में कार्यक्रम होंगे। गांधीजी का देश को आजाद कराने में योगदान का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि साधारण व्यक्ति भी उन्हें अच्छी तरह जानता है। आपने वर्ष 1960 का एक संस्मरण सुनाते हुए कहा कि पत्रकार विष्णु प्रभाकर उत्तराखंड के एक गांव में गये। वहां ग्रामीणों से पूछा कि रेल देखी है, बस देखी है? ग्रामीणों ने कहा नहीं। फिर उन्होंने पूछा गांधीजी का नाम सुना है? सबने कहा कि सुना है। उन्होंने देश को आजाद कराया। इसके बाद उन्होंने पूछा कि जवाहरलाल नेहरू को जानते हो। उन्होंने कहा कि जानते हैं। फिर उन्होंने पूछा कि दोनों बड़ा कौन है? इस पर ग्रामीणों ने कहा जवाहरलाल नेहरू। इस पर उन्हें काफी आश्चर्य हुआ। कारण पूछा। इस पर ग्रामीणों ने कहा - 'गांधी, गांधी हैं, उन्हें छोटे-बड़े से क्या लेना देना।' ग्रामीण के विचार से सबको सीख लेने की जरूरत है। श्री विद्रोही ने बिहार में संपूर्ण नशाबंदी लागू करने तथा बुनियादी विद्यालयों को पुनर्जीवित करने के निर्णय के लिए मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार एवं बिहार सरकार को धन्यवाद दिया।

महात्मा गांधी के प्रपौत्र **श्री तुषार गांधी** ने कहा कि बापू के पूर्ण स्वराज का ख्वाब

आज भी अधूरा है। चम्पारण आजादी के इतिहास का प्रथम तीर्थ स्थान है। चम्पारण की इस मिट्टी को मैं प्रणाम करता हूं। इस मिट्टी पर आज मैं यह कहना चाहूंगा कि जिन मुद्दों को लेकर सत्याग्रह आंदोलन हुआ वो आज भी ज्वलंत है। देश में किसानों की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ है। विकास के नाम पर किसानों के सपनों को कुचला जा रहा है। किसान व गरीबों को उनका अधिकार नहीं मिला है। गांधीवादी संस्थाओं की स्थापना जिन सामाजिक लड़ाइयों के लिए की गयी, थी वे लुप्त होते जा रहे हैं। आज जिस तरह गरीबों और अमीरों के बीच की दूरी बढ़ी है वह इस देश की सीमा के खतरे से भी बड़ी है। हमें इसे दूर करना होगा। *चम्पारण से एक ऐसे आंदोलन की शुरुआत की जानी चाहिए जिससे पूरे देश का भला हो।* यह काम जिगर वाला कर सकता है। विनोबा भावे के भूदान आंदोलन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भूदान में मिली जमीन पर रचनात्मक कार्य होने चाहिए। वहां सामुदायिक स्तर पर किसानों के विकास के लिए काम होना चाहिए। बापू का संदेश देने वाले लोग पहले उनके विचारों को अपने जीवन में लागू करें। भाषण से अधिक कार्य पर बल देना होगा। हम बंट रहे हैं। जहां दिल बंट जाता है, वह कहने को देश रह जाता है। गांधी के विचारधारा पर खतरा बढ़ रहा है। गोडसे की विचारधारा को अपनायी जा रही है। उसे गांधीवाद को लागू कर ही काटा जा सकता है। चम्पारण सत्याग्रह के 100 साल पूरा हो रहा है। बापू के पूर्ण स्वराज का ख्वाब आज भी अधूरा है। चम्पारण की मिट्टी को प्रणाम करता हूं। गांधीवादी संस्थाओं की स्थापना जिन सामाजिक लड़ाइयों के लिए की गयी थी वो लुप्त होते जा रहे हैं। आज भगत सिंह, राजगुरु की शहादत का दिन है। हमें उनसे सबक लेनी चाहिए कि कैसे वो हंसते-हंसते फांसी पर झूल गये थे। लेकिन, यह जरूरी नहीं कि शहादत हम प्राण देकर ही दें। हम अपने कार्यों से भी शहादत दे सकते हैं। आज वह वक्त आ गया है जब सत्याग्रह की मिट्टी से देश में पूर्ण स्वराज के लिए जंग

छेड़ी जानी चाहिए। आज भी देश में एक तरह से अंग्रेज हावी हैं। हम ये समझना होगा और अपनी आवाज बुलंद हो इसकी कोशिश करनी होगी। शपथ लेनी होगी कि 'मेरा जीवन ही संदेश हो।' उन्होंने चम्पारण सत्याग्रह में माता कस्तूरबा के योगदान का स्मरण करते हुए कहा, जब गांधीजी खेड़ा सत्याग्रह के लिए गये तब बा ही चम्पारण सत्याग्रह का नेतृत्व करती थीं। महात्मा गांधी ने कहा था, अगर मैं महात्मा हूं तो इसकी आत्मा बा ही है।

मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने देशभर से पधारे सर्वोदय कार्यकर्ताओं एवं प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि बिहार सरकार पूरे राज्य में एक साल तक

सत्याग्रह शताब्दी वर्ष मनाने का निर्णय किया है। इसके पहले चरण के रूप में पटना में 10-11 अप्रैल, 2017 को 'राष्ट्रीय विमर्श' का आयोजन किया गया है। राज्य के हर व्यक्ति को गांधी के विचार से ओतप्रोत करने का लक्ष्य है। इस *'राष्ट्रीय विमर्श'* के माध्यम से आज के परिप्रेक्ष्य में देश को गांधी विचार से जोड़ने और आगे बढ़ाने के लिए क्या किया जाना चाहिए, इसका निष्कर्ष निकाला जायेगा। 10 अप्रैल 2017 से प्रारम्भ होकर 21 अप्रैल 2018 तक आयोजित समारोहों के तहत विविध कार्यक्रम होंगे।

आगे उन्होंने कहा कि गांधीजी के बारे में सब लोग जानते हैं, पर उनके विचारों से बड़ी संख्या में लोग आज भी अनभिज्ञ हैं। सत्याग्रह शताब्दी वर्ष में राज्य सरकार द्वारा गांधीजी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाया जायेगा। नयी पीढ़ी को बापू के जीवन दर्शन के बारे में जानना आज की जरूरत है। गांधीजी के विचारों से लोगों को अवगत कराने के लिए हम घर-घर दस्तक देंगे। जहां भी एक सौ की आबादी होगी, वहां जाकर बापू की यादों से जुड़ी फिल्म दिखायी जायेगी। बिहार के हर सरकारी स्कूलों में प्रार्थना के बाद बापू के कर्म के बारे में बच्चों को कहानी सुनायी जायेगी। अगर नयी पीढ़ी में 10 प्रतिशत लोग भी संवदेनशील हो गये तो 15 से 20 वर्षों में समाज की तस्वीर बदल जायेगी। कुदरत ने इंसान को गढ़ा है, उसमें हर प्रकार के लोग होते हैं। ऐसा नहीं है कि सभी गांधी के विचारों से सहमत हों। जब गांधीजी थे उस समय भी उनके विरोध करने वाले थे। इस स्थिति से घबराने की जरूरत नहीं है।

जहां-जहां बापू गये थे, उन सभी स्थलों का विकास किया जायेगा। बापू ने जिन बुनियादी विद्यालयों की स्थापना की थी उनका भी विकास किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अभी लोगों को महात्मा गांधी पसंद हैं, लेकिन उनके विचारों पर लोग नहीं चलना चाहते हैं। हम प्रचार और शोर-शराबे में विश्वास नहीं रखते हैं, हम काम करना चाहते हैं। समाज में दोनों धाराएं हैं, लेकिन हम अगर 10 फीसदी लोगों को भी गांधी के विचारों से जोड़ लेते हैं, तो बड़ा सामाजिक परिवर्तन होगा।

मुख्यमंत्री ने इसके बाद प्रदेश में लागू शराबबंदी की चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने पिछले दस सालों में जो काम किये हैं, वे बापू, लोहिया, जेपी और कर्पूरी के विचारों से प्रभावित होकर किये हैं। शराबबंदी करके हमने गांधीजी के सपने को साकार किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज पूरी दुनिया दो विचारधाराओं में बंट गयी है। अमेरिका में कुछ हो रहा है, अपने देश में देख लीजिए। जर्मनी में नाजी पार्टी के फिर से जीवित करने की बात हो रही है। पाकिस्तान में शाह कलंदर के मजार पर हमला क्या संदेश देता है? लंदन में संसद पर हमले का प्रयास हुआ है। असहिष्णुता लगातार बढ़ रही है। इसका हल गांधीजी के विचारों में है। अगर हम सब लोग संवेदनशील हो जायें, तो दस से बीस साल में देश की तस्वीर बदल जायेगी, लेकिन सबको समझा लेना सम्भव नहीं है। कुदरत ने इनसान को गढ़ा है। किसी भी दौर को याद करें हर तरह के लोग रहे हैं। नायक भी रहे हैं और खलनायक भी रहे हैं। ये प्राकृतिक चीज है। इससे घबराने की जरूरत नहीं है। हमें अपना काम करना चाहिए।

चम्पारण में पूरे साल सत्याग्रह से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। सरकार द्वारा 10 अप्रैल 2017 से 21 अप्रैल 2018 तक कई कार्यक्रमों का आयोजन होगा। बापू स्मृति यात्रा भी निकाली जायेगी। जहां-जहां बापू गये थे उन स्थलों का विकास होगा। गांधी सत्याग्रह वर्ष में एक सपना को पूरा किया है। मैं व्यक्तिगत रूप से उन स्थलों को देख चुका हूं, बापू ने जिन बुनियादी विद्यालयों की स्थापना की थी उनका भी विकास किया जा रहा है। बापू के विचारों का शंखनाद चम्पारण से किया जायेगा। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि पहले लोग मजाक उड़ायेंगे, फिर विरोध करेंगे बाद में साथ हो जायेंगे। चम्पारण में बापू ने आकर किसानों को समस्याओं से

मुक्त कराया, शिक्षा के प्रति सजग किया, यह उस समय की परिस्थिति थी। वर्तमान में क्या जरूरत है इसके बारे में एक सही दिशा में सोच स्थापित करने की जरूरत है। आज देश में संकट है। जिस विचारधारा का तेजी से फैलाव हो रहा है, उससे सवाल उठने लगा है कि देश किस ओर जा रहा है? जरूरत है गांधी, लोहिया और जयप्रकाश नारायण के आदर्शों को मानने वालों के एकजुट होने की। गांधीवाद कैसे जीवित रहेगा, यह यक्ष प्रश्न देश के सामने है।

चंपारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह के इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए मुख्यमंत्री ने सर्व सेवा संघ को धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री एवं वरिष्ठ गांधीवादियों के हाथों सर्व सेवा संघ प्रकाशन द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा लिखित पुस्तक 'चम्पारण में महात्मा गांधी', जयंत दिवाण द्वारा लिखित 'चंपारण सत्याग्रह की कहानी' तथा सर्व सेवा संघ का मुखपत्र 'सर्वोदय जगत' के चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी विशेषांक का विमोचन हुआ। पुस्तकों तथा 'सर्वोदय जगत' विशेषांक का विमोचन कार्य सर्व सेवा संघ प्रकाशन के संयोजक अरविन्द अंजुम तथा संपादक अशोक मोती ने मिलकर सम्पन्न कराया।

बिहार के **शिक्षा मंत्री श्री अशोक चौधरी** ने चम्पारण सत्याग्रह तथा महात्मा गांधी के योगदान पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि बिहार सरकार ने शिक्षा का बजट बढ़ाया है जबकि दूसरी सरकारें शिक्षा के बजट को कम कर रही है। हम बुनियादी स्कूलों की हालत को सुधारेंगे। चम्पारण सत्याग्रह सिर्फ राजनीतिक संघर्ष नहीं था। ताजा दौर में भी गांधी की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। जिस प्रकार बापू ने फिरंगी हुकूमत के खिलाफ निडरता का परिचय दिया, उसी प्रकार सीएम नीतीश कुमार ने सूबे में पूरी निडरता के साथव पूर्ण शराबबंदी लागू कर एक मिसाल कायम की। सरकार ने गांधीजी द्वारा स्थापित बुनियादी विद्यालयों को सशक्त बनाने का फैसला किया है। सरकार ने शिक्षा पर 25 करोड़ की बजट का प्रावधान किया है।

समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ गांधीवादी, पूर्व सांसद एवं पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह ने की।

डॉ. एस.एन. सुब्बरावजी ने अन्य साथियों के साथ *'प्यारा भारत देश दुलारा मेरा हिन्दुस्तान'* गीता गाकर सबों को झुमा दिया।

अशोक मोती एवं अन्य साथियों द्वारा गये क्रांति गीत 'सम्पूर्ण क्रांति अब नारा, भावी इतिहास हमारा है' से उद्घाटन सत्र का समापन हुआ।

शाम में डॉ. एस. एन. सुब्बाराव के नेतृत्व में सर्वधर्म प्रार्थना, कवि सम्मेलन तथा मुशायरा हुआ।

चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह का दूसरा दिन

चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह का मुख्य विषय था—'चम्पारण सत्याग्रह एवं नव उपनिवेशवाद'। इस विषय पर कई वरिष्ठ जनों ने अपने विचार इस प्रकार रखे—

जन आंदोलन के राष्ट्रीय समन्वय की संयोजक तथा नर्मदा बचाओ आंदोलन की संस्थापक **सुश्री मेधा पाटकर** ने कहा, आज

भूमि की लूट हो रही है। सरकारें खेती की जमीन किसानों से अधिग्रहित कर कॉरपोरेट घरानों को बांट रही है। सरकारें कंपनियों के एजेंट की तरह काम कर रही है। नर्मदा घाटी, छत्तीसगढ़ सहित देश के अनेक भागों में लोगों को उजाड़ा जा रहा है। फलस्वरूप लोगों का गुस्सा जगह-जगह फूट रहा है।

एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष भूमि अधिकार अभियान के संयोजक **श्री पी. वी. राजगोपाल** ने भूमिहीनता तथा आवास के मुद्दे

को उठाते हुए कहा कि अनेक कानूनों के बावजूद भूमिहीनों को न्याय नहीं मिल रहा है। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री महादेव विद्रोही ने उन्हें चम्पारण की मिट्टी का कलश दिया, जिसे लेकर के विक्रम से पटना तक की यात्रा करेंगे।

उन्होंने सभी समानधर्मी संगठनों को सर्व सेवा संघ के बैनर तले एकजुट होकर काम करने का आवाहन किया।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष एवं हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री **स्वामी अग्निवेश** ने कहा कि, गांधीजी ने अंग्रेजों से

लड़ने के लिए सत्याग्रह के उपकरण का इस्तेमाल किया। सत्याग्रह तभी संभव है, जब उसका मार्ग अहिंसा का हो। सत्याग्रह का अर्थ है शठे प्रत्यपि सत्य। हिंसा के सामने अहिंसा व क्रोध के सामने अक्रोध प्रकट करना। उन्होंने बिगड़ रहे साम्प्रदायिक सौहार्द पर चिन्ता व्यक्त की। आगे उन्होंने आशा व्यक्त की कि सर्व सेवा संघ किसान-मजदूरों के हक की आवाज बने।

उन्होंने कहा कि विषमता की खाई ही बंधुआ मजदूरी व मानव व्यापार का मुख्य कारण है। इस खाई को दूर करने के लिए एक बेहतर कार्य योजना तैयार कर काम करना होगा।

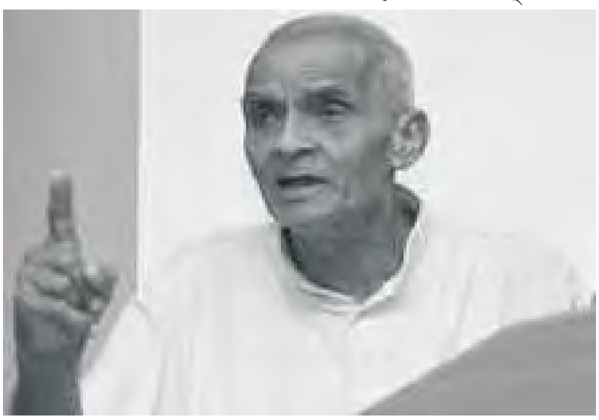

नये समाज के निर्माण के लिए कड़ा संघर्ष करने की जरूरत है। अभी तक सबों ने अमीरों का ही पेट भरने का काम किया है। गरीबों की उपेक्षा की है। चम्पारण से ही एक बार फिर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तरह बंधुआ मजदूरी व मानव व्यापार के खिलाफ आंदोलन की शुरुआत की जायेगी। इसके लिए तैयारी करने का आह्वान आयोजक से किया और कहा आगे कहा कि असल मानवता की सेवा यही है और यही धर्म भी। बिहार में भूदान-ग्रामदान बोर्ड को नये सिरे से गठित करने की जरूरत है। भूदान में बिहार को सबसे अधिक 22 लाख एकड़ जमीन पहाड़ व पठार है। पर्चा पर दी गयी आधी जमीन पर बेदखली है। पर्चाधारियों को जमीन पर कब्जा दिलाने के लिए अब आंदोलन चलाया जायेगा।

डॉ. रामजी सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि चम्पारण सत्याग्रह का मुद्दा जमीन था। आज भी जमीन व किसान का सवाल बड़ा है। देश में आज भी एक करोड़ लोग भूमि विहीन हैं। किसानों की हालत खराब है। हिन्दुस्तान का गांव मृतप्राय दिखता है। खेती खत्म हो रही है। आमद कम और लागत अधिक है। पूंजीपति व सरकार मिलकर जमीन का खेल खेल रहे हैं। कम कीमत पर सरकार पूंजीपतियों को जमीन देकर उन्हें अधिक मुनाफा दे रही है। गुजरात में सरकार ने एक पूंजीपति को 15 रुपये प्रति वर्गफीट भूखंड दिया, जिसे पूंजीपति ने 300 रुपये प्रति वर्गफीट बेचा।

इस अवसर पर सुलभ इंटरनेशनल के आई. सी. कुमार, सिस्टर सेलिस, लक्ष्मण सिंह, नवभारत जागृति केन्द्र के गिरिजा सतीश, प्रमोद शर्मा, ई. पी. मेनन, सर्वोदय समाज के संयोजक आदित्य पटनायक आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। ❑

विश्व-बंधुत्व

हिन्दू धर्म के शुद्धतम रूप में तो ब्राह्मण, चींटी, हाथी और श्वपाक सबका दर्जा समान माना गया है। हिन्दू धर्म न केवल मनुष्य-मात्र के, बल्कि प्राणिमात्र के बंधुत्व का आग्रह करता है। यह कल्पना ऐसी है कि इससे मनुष्य चकरा जाता है, मगर हमें इस पर अमल करना है। जिस क्षण हम मनुष्य-मनुष्य के बीच सच्ची और सजीव समानता फिर से स्थापित कर लेंगे, उसी क्षण हम मनुष्य और सारी सृष्टि के बीच समानता स्थापित कर सकेंगे। जब वह दिन आयेगा तब संसार में शांति और मनुष्यों में सद्भावना का राज्य फैल जायेगा।

हरिजन, 28-3-'36 **–महात्मा गांधी**

सर्व सेवा संघ का 85वां अधिवेशन सम्पन्न

महादेव विद्रोही सर्व सेवा संघ के अठारहवें अध्यक्ष निर्वाचित

मुंशी सिंह महाविद्यालय के सभा-भवन में श्री विद्रोही की अध्यक्षता में सर्व सेवा संघ का अधिवेशन शुरू हुआ। अधिवेशन के मुख्य अतिथि महात्मा गांधी के सेवाग्राम आश्रम के अध्यक्ष श्री जयवंत मठकर, सर्वोदय समाज के संयोजक श्री आदित्य पटनायक, वरिष्ठ गांधीवादी डॉ. रामजी सिंह, सम्पूर्ण क्रांति राष्ट्रीय मंच के संयोजक श्री भवानीशंकर कुसुम, संयोजक प्रकाशन अरविन्द अंजुम, परिसर संयोजक शिवविजय सिंह, सर्वोदय जगत के संपादक अशोक मोती, राजस्थान सर्वोदय मंडल की अध्यक्ष आशा बोथरा, पश्चिम बंगाल सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष नारायण भाई, तेलांगना सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष तथा प्रथम भूदान दाता वी. रामचन्द्र रेड्डी के पौत्र श्री अरविन्द रेड्डी, बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष त्रिभुवन नारायण सिंह, महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष प्रो. सोमनाथ रोड़े, मुम्बई सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष जयंत दिवाण, उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री मधुसूदन, छत्तीसगढ़ सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री सियाराम साहू, झारखण्ड सर्वोदय मित्र मंडल के संयोजक श्री विनोद रंजन, मुंशी सिंह महाविद्यालय के प्राचार्य श्री हरिनारायण ठाकुर, गांधी संग्रहालय, मोतीहारी के मंत्री तथा पूर्वी चम्पारण जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष तथा पूर्व मंत्री श्री ब्रजकिशोर सिंह, मंत्री विनय कुमार आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर राजस्थान के वरिष्ठ सर्वोदयकर्मी एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री सत्यदेव, छत्तीसगढ़ के वयोवृद्ध गांधीवादी श्री पंथराम वर्मा, पश्चिम बंगाल के सर्वोदय मंडल के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री बिमलचन्द्र पाल तथा पश्चिम बंगाल के ही वरिष्ठ सर्वोदय कार्यकर्ता श्री विनयकृष्ण चक्रवर्ती को 'सर्वोदय सम्मान' तथा अंगवस्त्रम् से सम्मानित किया गया।

मोतीहारी (पूर्वी चम्पारण) में आयोजित सर्व सेवा संघ (अखिल भारत सर्वोदय मंडल) के ८५वें अधिवेशन में श्री महादेव विद्रोही को सर्वसम्मति से सर्व सेवा संघ का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। अधिवेशन में इस बात की घोषणा

निर्वाचन अधिकारी भाई भवानीशंकर कुसुम ने की।

अधिवेशन का समापन वक्तव्य देते हुए सर्व सेवा संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री महादेव विद्रोही ने कहा कि सर्व सेवा संघ भूमि समस्या, नशाबंदी, खादी तथा आर्थिक विषमता के मुद्दों पर अपने आंदोलन को केन्द्रित करेगा। चम्पारण सत्याग्रह समारोह तथा इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिए जिन संस्थाओं एवं महानुभावों और खासकर मोतीहारी की जनता ने खुले दिल से जो सहयोग किया, उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने कहा कि ये कार्यक्रम शुरुआती कार्यक्रम हैं, पूरे शताब्दी वर्ष के दरम्यान देशभर में अनेक कार्यक्रम होंगे, इसमें आप सबका सहयोग मिलेगा, ऐसी अपेक्षा है। अधिवेशन के संचालन में सर्व सेवा संघ के महामंत्री शेख हुसैन, मंत्री चंदन पाल, मंत्री विजय कुमार ने अहम भूमिका निभायी। इस अवसर पर ट्रस्टी ई. पी. मेनन, तपेश्वर भाई, शशि बहन, मंत्री जीवीएसडीएस प्रसाद भी उपस्थित थे।

वर्धा जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री प्रशांत गुजर के नेतृत्व में 'हम होंगे कामयाब' गीत के साथ अधिवेशन समाप्त हुआ। **-शेख हुसैन**

श्री महादेव विद्रोही : 1969 में जब वे जिला स्कूल, सहरसा के छात्र थे, तब लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा स्थापित सर्वोदय आंदोलन के युवा संगठन 'तरुण शांति सेना' में शामिल होकर सार्वजनिक जीवन की शुरुआत की। 1974 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर कॉलेज का बहिष्कार किया। सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन एवं आपातकाल के दौरान उन्हें चार बार गिरफ्तार कर मंडल कारा, सहरसा तथा विशेष केन्द्रीय कारा, भागलपुर में रखा गया। उन्होंने निष्ठापूर्वक छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी तथा सम्पूर्ण क्रांति युवा संगम का नेतृत्व किया। 2014 में सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष चुने जाने के पूर्व उन्होंने संघ के महामंत्री तथा प्रबंधक ट्रस्टी के दायित्वों का भी सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

श्री विद्रोही ने क्रांति के स्वर, जयप्रकाश और संघर्ष वाहिनी : एक दस्तावेज, प्रशिक्षण शिविर मार्गदर्शिका, कवायद : आदेश एवं प्रक्रिया आदि कई पुस्तकों की रचना की। लोकहित के मुद्दों पर उन्होंने कई संघर्ष कर जनता को न्याय दिलाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाये। गुजरात के साबरकांठा जिले के आदिवासी क्षेत्र में लोक संगठन, जल-संरक्षण, नशाबन्दी एवं सामाजिक न्याय आदि जैसे कई महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में आप कार्य कर रहे हैं।

श्री विद्रोही के अध्यक्ष चुने जाने पर मुम्बई उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश पद्मविभूषण डॉ. चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, डॉ. एस. एन. सुब्बराव, पी. वी. राजगोपाल, राजेन्द्र सिंह सहित देशभर से अनेक शुभकामना एवं बधाई के संदेश प्राप्त हो रहे हैं। अधिवेशन में देश के 23 राज्यों से पधारे प्रदेश सर्वोदय मंडलों के अध्यक्षों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, संपूर्ण क्रांति आंदोलन के साथियों आदि की बधाइयों का तांता लगा हुआ है। ❑

अहिंसक संगठन

बापू ने जिस प्रकार से संगठन बनाये, वे केवल स्वेच्छा के ही नहीं थे, लोग उनमें अपनी मर्जी से ही आते थे, इतनी ही बात नहीं थी; उनमें जो अधिष्ठान या अंतिम शक्ति होती थी, वह पूर्ण रूप से नैतिक होती थी। उनमें नैतिक शक्ति के अतिरिक्त दूसरी कोई शक्ति नहीं थी। यानी अनुशासन-भंग की कार्यवाही की शक्ति भी नहीं थी। जिसे आप निर्वासन या खारिज करना कह सकते हैं कि हम अपनी संस्था में से तुम्हें निकाल देंगे, उस शक्ति का भी प्रयोग नहीं होता था। और दूसरे किसी प्रकार के दंड की शक्ति तो बापूजी की संस्थाओं में थी ही नहीं।

इसलिए जब हम अहिंसक संगठन बनाते हैं, तो उसकी शक्ति का आधार संख्या नहीं होना चाहिए। इसका मतलब यह

नहीं है कि ज्यादा-से-ज्यादा आदमी हम उसमें शामिल कराने की कोशिश नहीं करेंगे, लेकिन उस संगठन के कितने सदस्य हैं, इस पर हमारा आधार नहीं रहेगा। संख्या पर जोर देने वाला संगठन बनेगा, तो परिणाम यह होगा कि संख्या हमारी शक्ति का आधार बन जायेगी। सत्याग्रह में व्यक्तिगत सत्याग्रह भी होता है, सामुदायिक सत्याग्रह भी होता है। लेकिन सामुदायिक सत्याग्रह का आधार संख्या नहीं होती, समष्टि का संकल्प होता है, जैसे सामुदायिक प्रार्थना में। सामुदायिक प्रार्थना में संख्या का महत्त्व नहीं होता। मैं भी प्रार्थना करता हूं, आप भी प्रार्थना करते हैं, सम्मिलित प्रार्थना में मेरा और आपका सम्मिलित संकल्प है, मेरी और आपकी सम्मिलित भावना है। इस प्रकार जब अनेक व्यक्तियों की सम्मिलित भावनाएं और सम्मिलित संकल्प होता हैं, तब हम उसे *'सामुदायिक सत्याग्रह'* कहते हैं। *'संख्यात्मक सत्याग्रह'* एक अलग चीज है और 'सामुदायिक सत्याग्रह' का अधिष्ठान ही अलग हो जाता है। संगठन ऐसा होना चाहिए कि जिसके बारे में हमारी अपनी आसक्ति न हो। **–दादा धर्माधिकारी**

पृष्ठ 9 का शेष....

भीड़ में उसका रुक सकना या झुक सकना सर्वथा असम्भव था।

तीन चार मील चलने के बाद हम लोग एलिस ब्रिज के निकट पहुंचे। साबरमती नदी का यह विशाल पुल साबरमती वाली सड़क को अहमदाबाद की सड़क से जोड़ता है। यह पुल पार होते ही अहमदाबाद शहर शुरू हो जाता है। इस पुल पर इतनी जबर्दस्त भीड़ थी कि इस रास्ते गांधीजी को ले जाना खतरे से खाली नहीं समझा गया। इसलिए साबरमती नदी को पैदल पार करना ही ठीक समझा गया। पुल के कुछ और आगे जाकर हम लोग साबरमती नदी की विशाल बालुकामय गोदी में घुस गये। गरमी का मौसम शुरू हो गया था और नदी में कहीं भी घुटने-भर से अधिक पानी नहीं था। जहां से नदी सबसे अधिक आसानी से पार की जा सकती थी, वहीं हम लोग नदी में जा घुसे। पानी और बालू मिला कर नदी का पाट आधे मील से कम तो नहीं ही होगा। जिस समय हम लोग नदी के बीच में थे, उस समय सहसा जो मैंने दाहिने-बांये और आगे-पीछे देखा तो उस अपार जन-समूह की विशालता से मैं अभिभूत हो गया। यदि एक ढोलक नदी के तट से दूसरे तट तक मानव-मुंडों के ऊपर होकर लुढ़काई जाती तो वह रास्ते में कहीं भी न गिर कर अंत तक मुंडों पर लुढ़कती पहुंच जाती—इस तरह एक तट से दूसरे तट तक मानव-मुंड बिछे हुए दिखायी दे रहे थे।

नदी पार करके हम लोग प्रायः देहात में पहुंच चुके थे। अहमदाबाद शहर एक किनारे छूट चुका था। हमारा पहला पड़ाव जिस गांव में था वह साबरमती आश्रम से बारह मील दूर था। चार मील के करीब हम चल चुके थे। हमारे साथ-साथ इतनी अधिक भीड़ के चलने के कारण धूल इतनी अधिक उड़ रही थी कि आसपास कुछ दूर तक हम लोग कुछ भी नहीं देख पाते थे। सांस लेने में काफी कष्ट हो रहा था। गांधीजी ने भीड़ से प्रार्थना की कि अब वह वापस लौट जाए। पर भीड़ का जोश इतनी जल्दी ठंडा होने वाला नहीं था।

कुछ दूर और हम लोग इसी तरह चले। सहसा अब एक और नई समस्या आ खड़ी हुई। नदी के पार पहले से ही सिनेमा कंपनियों की कई बड़ी-बड़ी मोटर-लारियां पूरे साज सामान के साथ मौजूद थीं। इन लोगों ने हमें अपना निशाना बनाना शुरू कर दिया। इनका स्वार्थ इसमें था कि हम लोगों की यात्रा के सभी पहलुओं का चित्र वे लें। इसके लिए यह जरूरी था कि वे कभी पीछे रहें, कभी सर्र से दौड़कर बाजू में आ जायें और कभी उस तरह एकदम आगे। कई मोटर-लारियों ने जो चारों तरफ से यह दौड़ मचानी शुरू की तो सारा रास्ता धूल ही धूल से भर गया। धूल में ताकते-ताकते हमारी आंखें बिलकुल लाल हो गयीं, सांस लेने में हवा की जगह धूल का ही भाग विशेष रहने लगा, और खांसते-खांसते हम लोगों को आफत आ गयी।

आखिर गांधीजी को कुछ मील और चलने के बाद रुक जाना पड़ा। उनके रुकते ही सब लोग रुक गये। गांधीजी ने अपनी पीठ फेरी और अपने पीछे आने वालों की ओर मुंह करके खड़े हो गये। मैं तो उनका चेहरा देखते ही स्तंभित रह गया। यह कैसी शक्ल है गांधीजी की! शरीर का जितना हिस्सा खुला हुआ था उसमें चमड़ी कहीं लेशमात्र भी नजर नहीं आती थी। मालूम होता था, मिट्टी का तैयार किया हुआ जीवित पुतला खड़ा है। केवल पलक हिलने पर वही तेज चमकीली आंखें दिखायी पड़ती थीं—इस तरह धूल की एक मोटी परत उनके सारे शरीर पर जम गयी थी। अभी तक हम लोग आगे ही देखते चल रहे थे, साथियों में से भी किसी का चेहरा मैंने कभी देर से नहीं देखा था। गांधीजी के चेहरे पर इतनी धूल जमी देखकर मुझे अपने साथियों की ओर ताकने का ख्याल आया। और तब मैंने विस्मित होकर देखा कि सभी गांधीजी के प्रतिरूप बने हुए थे, औरप मैं भी तो मिट्टी की एक मोटी परत अपने चेहरे पर, हाथों पर, पांवों पर चढ़ाए हुए था!

वहीं एक बड़ा वृक्ष था। उसी के नीचे गांधीजी ने डेरा डाला और सारी भीड़ को बैठ जाने के लिए कहा। पास ही एक तालाब था। हम सबने वहां जाकर अपने शरीर पर से धूल धोई। मुझे ठीक याद है कि दोनों हाथों में पानी भर कर जब पहली बार मैंने अपना चेहरा धोया तो मेरे हाथ में पानी की जगह खूब गाढ़ी कीचड़ रह गयी थी!

साथ आने वाली भीड़ से लौट जाने का अनुरोध करते हुए बापू ने एक छोटा-सा भाषण दिया। उसके बाद यात्रा फिर जारी हो गयी। थोड़े से अत्यन्त हठी लोगों को छोड़कर बाकी सारी भीड़ बापू के अनुरोध की रक्षा कर आगे बढ़ने से बिरत हो गयी और उस भयंकर धूल से हमें छुट्टी मिली।

अपने पहले पड़ाव तक पहुंचने के पूर्व राह में कई गांव मिले, जिनके निवासियों ने भी बापू के स्वागत की कम तैयारी नहीं की थी। गांव से काफी पहले ही हमें ग्रामवासी नर-नारियों का एक दल गाजे-बाजे के साथ मिलता, जिसका नेता बापू की अभ्यर्थना करते हुए उनके माथे पर टीका लगाता, उनके गले में माला डालता और स्त्रियां उनकी आरती उतारतीं और शुभ-सूचक नारियल उनके हाथ में रख देतीं। हमारा पहला पड़ाव जिस गांव में था, उसका स्वागतकारी दल तो बहुत ही बड़ा था और काफी पहले अभ्यर्थना के लिए आ पहुंचा था। तब तक बापू के माथे पर एक के ऊपर एक कितने ही टीके लग चुके थे, उनके गले में कितनी ही मालाएं पड़ चुकी थीं, कितने ही नारियल उनकी भेंट हो चुके थे!

सारी यात्रा में बापू का इसी प्रकार स्वागत होता रहा। *(क्रमशः अगले अंक में)*

पत्र

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर सस्नेह अभिवादन!

'सर्वोदय जगत' के नवीनतम सभी अंक सर्व सेवा संघ प्रकाशन की वेबसाइट पर आप अपलोड करते हैं, जिससे अब सर्वोदय जगत सर्वत्र सुलभ हो गया है। आपको इस पुनीत कार्य हेतु कोटि कोटि धन्यवाद!

सर्वोदय जगत का मार्च अंक ऑनलाइन पढ़ा। बहुत ही संग्रहणीय अंक है। चम्पारण पर जो विशिष्ट आलेख दिये हैं, एक पाठक का नजरिया बदलने में सहायक है। गांधीजी का लेख प्रिय लगा, चम्पारण सत्याग्रह के बारे में विस्तृत रूप से जानने को मिला, शेष सभी आलेख, कविताएं भी बहुत सराहनीय हैं।

सर्वोदय जगत आज सर्वोदयी विचारधारा को हम पाठकों तक लाने वाला सशक्त माध्यम है। गांधी, विनोबा, जयप्रकाश, दादा धर्माधिकारी जैसे महान व्यक्तित्वों के विचार हमें नियमित रूप से मिलते हैं, जो हमारी चिन्तन शक्ति का विकास कर, सोचने का दायरा भी बढ़ाते हैं। सर्वोदय जगत अब तो हमारी मानसिक शक्ति का प्रमुख स्रोत है।

आपको एवं सर्वोदय जगत के पूरे संपादक मंडल को मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं। आभार व्यक्त करती हूं।

सादर शुभकामनाओं सहित।

–बुद्धि पटेल,

जोधपुर-342014 (राजस्थान)

× × ×

''चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी सम्मेलन' व अधिवेशन की सफलतापूर्ण सम्पन्नता के लिए बधाई।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चम्पारण सत्याग्रह यात्रा के दौरान मोतीहारी प्रवास के समय, चम्पारण सत्याग्रह पर विराम लगाने के निमित अंग्रेजों ने, बत्तख मियां के माध्यम से, दूध में जहर मिलाकर मारने का असफल प्रयास किया था। हालांकि उस समय भारत और पाकिस्तान का बंटवारा का प्रश्न नहीं था।

बापूधाम मोतीहारी रेलवे स्टेशन के पूर्व दिशा में बत्तख मियां के नाम से 'बत्तख मियां द्वार' बनाया गया था, जिसने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को बचाने का काम किया था, लेकिन अभी कुछ समय पहले इसको ध्वस्त कर नया द्वार बनाया गया है। जिस पर बत्तख मियां द्वार नहीं लिखा गया है। यह बत्तख मियां की स्मृति चिह्न मिटाने का प्रयन है। इस धरोहर को बचाया जाना चाहिए। लेकिन इस बिन्दू पर किसी शासन-प्रशासन अथवा गांधी भक्तों का ध्यान नहीं है। **–श्रीनाथ प्रसाद,**

महात्मा गांधी स्मारक परिसर, ग्रांधी ग्राम, चन्द्रहिया, मोतीहारी, पूर्वी चम्पारण

× × ×

चम्पारण के इस गांधी अभियान से अंग्रेज सरकार परेशान हो उठी। सारे भारत का ध्यान अब चम्पारण पर था। सरकार ने मजबूर होकर एक जांच आयोग नियुक्त किया, गांधीजी को भी इस सदस्य बनाया गया। परिणाम सामने था। कानून बनाकर सभी गलत प्रथाओं को समाप्त कर दिया गया। जमींदार के लाभ के लिए नील की खेती करने वाले किसान अब अपने जमीन के मालिक बने। गांधीजी ने भारत में सत्याग्रह की पहली विजय का शंख फूंका। चम्पारण ही भारत में अहिंसक सत्याग्रह की जन्मस्थली बना।

हम मानते हैं कि सामान्य आदमी भी सक्षम होकर जागतृत नागरिक की भूमिका निभा सकता है। हमारी संस्कृति में नारदमुनि जैसे आचार्य ने वाल्या जैसे लुटेरे को भी प्रेरित किया तो कल का वाल्या, महर्षि वाल्मीकि बने, और उन्होंने सारे समाज को संस्कार देने वाला 'वाल्मीकि रामायण' जैसा महाकाव्य दिया।

–किशन गोरडिया

संयोजक, सद्भावना संघ, मुम्बई

× × ×

खादी की ताकत

एटम बम में जितनी शक्ति है उससे कई गुना ज्यादा ताकत खादी में है। फर्क इतना ही है कि बम की शक्ति विध्वंसक है और खादी की शक्ति विधायक है। यह ताकत महात्मा गांधी ने देखी थी। इसलिए इंग्लैंड में बैरिस्टर होने के बाद भी जब वे भारत में आये तब चर्खे की तलाश की और उस पर अनेक प्रयोग किये। चर्खा या वस्त्र कला अनादिकाल से भारतीय लोगों को मालूम है। लेकिन महात्मा गांधी की विशेषता यह है कि उन्होंने चर्खे के पीछे अर्थशास्त्र खड़ा किया, जिससे पूरे राष्ट्र की उन्नति हो सकती है। इसलिए उन्होंने कह दिया कि 'खादी केवल वस्त्र नहीं विचार है'। उनके जाने के बाद हम यह सब भूल गये और खादी यानी कपड़ा और उसके निर्माण के लिए 'खादी कमीशन' यह सब बातें हुई। जो हुआ सो हुआ अब आगे अब आगे क्या करना है यह हमें सोचना होगा।

मैंने कुछ प्रयोग किये हैं और अपना अनुभव सबके सामने रखता हूं। मैं जन्म से खादी पहनता हूं। पिताजी ने 1942 में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था। घर में चर्खा था और माता भी सूत कातती थीं एवं खादी पहनती थीं। मेरी शिक्षा तिलक राष्ट्रीय विद्यालय खामगांव में 1952 से 1958 तक हुई। शिक्षक भी स्वतंत्रता सेनानी थे। हमें पढ़ाया गया कि खादी के माध्यम से गांवों की उन्नति होगी। तब मैंने संकल्प किया आखिरी दम तक निर्व्यसनी रहूंगा और खादी पहनूंगा। लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती गयी वैसे-वैसे चारों तरफ देख रहा था, मुझे एक भी गांव खादी के माध्यम से उन्नत नजर नहीं आया। इसका मुझे दुख हुआ। इस काम के लिए बड़े-बड़े कारखाने उपयुक्त नहीं हैं। छोटे-छोटे यूनिट गांव-गांव में खड़े करने होंगे। उससे बेरोजगारों कोभी काम मिलेगा।

–प्र. न. नेमाडे

मो. : 9763499047

कविता

नमक

❑ उद्भ्रांत

ब्रह्माण्ड में जितनी हैं
आकाशगंगाएं
आकाशगंगाओं में जितनी हैं
पृथ्वियां
पृथ्वियों में जितने हैं
महासमंदर
महासमंदरों में जितना है
नमक

हमारी देह के
ब्रह्माण्ड में अवस्थित
रक्तवाहिनियों की
आकाशगंगाओं में
तंतुकोशिकाओं की
पृथ्वियों में
अनवरत लहरें लेते
रक्तकणों के समंदरों में
घुला है उतना नमक

यह नमक सर्वव्यापी
दृश्यमान
अदृश्य भी
शक्तिशाली-
जैसे कि एक राजा
उसके अपमान की जुर्रत
कर सकता कोई?

सहारा-विपन्न को
मायावी
करुणार्द्र ईश्वर की तरह
क्षण में बदलता रूप

बनता
सुस्वादु व्यंजन
गरीब की रोटी का

धूर्त्त, चतुर, चालाक,
अधिनायकवादी सत्ताज
जब उसे बनाए माध्यम
अपने विदेशी बाजार का
तो फिर वह तोड़-फोड़
सारे कानून दे
रूप ले ले-
अग्निकणों के
जलते स्फुलिंग का

हे महासमंदर!
हे विराट पृथ्वी!
हे आकाशगंगा!
और हे ब्रह्माण्ड!

हम नमक के
एक कण की तरह हैं क्षुद्र
और अपराध हमारा
हिमालय-सा

अपनी प्रकृति की तरह

समाते हुए
किसी गांधी की
बंद मुट्ठी में
प्रकृति से मिला हमें
जो यह उपहार
उसका प्रतिदान
कितना
क्या किया हमने?
प्रमाणित किया हमने
स्वयं को नमकहराम ही
नहीं?

हमें भी कर प्रेरित
किसी दीन, दुखी, शापित,
अभिशप्त
औ' विपन्न व्यक्ति की
सूखी रोटी के लिए
बनने को शाकभाजी के गुण
और स्वाद को समेटे
ऐसा नमक

शायद मिल सके हमें क्षमा
किए हुए जीवन में
अपने दुष्कर्म की। ❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा प्रिन्टेक, इंडियन प्रेस कॉलोनी, मलदहिया, वाराणसी से मुद्रित। प्रधान संपादक : बिमल कुमार / संपादक : अशोक मोती।